आर्थिक, सामाजिक व तकनीकी तौर पर मजबूत होती महिलाएं

सखी मंडल से ग्रामीण महिलाएं मजबूत हुई हैं. उनमें आत्मनिर्भरता बढ़ी है. ग्रामीण महिलाएं समूह से जुड़ कर घर और समाज में सुधार कर रही हैं. बचत के तरीकों को सीख कर लोन ले रही हैं और खुद व्यवसाय कर अपने परिवार को गरीबी से बाहर निकाल रही हैं. ग्रामीण महिलाओं की इस सफलता में उनके समूह की महिलाओं का भी बहुत बड़ा योगदान है. केंद्र सरकार की महत्वाकांक्षी योजना स्वच्छ भारत मिशन के तहत भी सखी मंडल की महिलाएं बेहतर काम कर रही हैं और रानी मिस्त्री का प्रशिक्षण प्राप्त कर खुद से शौचालय निर्माण कार्य में लगी हैं. कृषि को बढ़ावा देने और खेती के आधुनिक तकनीक को अपना कर उत्पादन में बढ़ोतरी के लिए महिलाएं कृषि मित्र बनकर अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं. ग्रामीणों को बैंक के काम के लिए चक्कर ना काटना पड़े इसलिए सखी मंडल की सदस्य बैंक सखी बनकर गांवों में ही सेवा दे रही है.

डेयरी से बदली तसवीन की जिंदगी

दूध का व्यवसाय करतीं महिला समूह की सदस्य तसवीन बीबी.

लातेहार जिला अंतर्गत बरवाडीह प्रखंड के छेंचा गांव की तसवीन बीबी अपने पति और दो बच्चों के साथ रहती हैं. तसवीन आज अपने पति और बच्चों के साथ एक अच्छी जिंदगी जी रही हैं और बेहतर भविष्य के सपने भी सजा रही हैं. कुछ साल पहले तक उनकी आर्थिक स्थिति बेहद खराब थी. पति के पास आजीविका का कोई जरिया नहीं था. पति कभी-कभार काम मिलने पर मजदूरी करते थे. इससे मात्र 150 रुपये मजदूरी मिलती थी. इतने पैसे में घर चलाना काफी मुश्किल हो रहा था. बच्चों की स्थिति को देखते हुए कभी-कभी तसवीन बीबी भी मजदूरी कर लेती थीं और उसके बदले में उन्हें कभी पांच किलो चावल, तो कभी 150 रुपये मिलते थे. इस तरीके से तसवीन के परिवार का गुजारा हो रहा था. इसी बीच तसवीन बीबी को स्वयं सहायता समूह के बारे में जानकारी मिली और साल 2015 में वो समूह से जुड़ गयीं. समूह से जुड़ने के बाद वो समूह से तीन सौ रुपये लोन लेकर अपने बच्चों की जरूरतों को पूरा करने लगीं. फिर जब समूह में बैंक लिंकेज के जरिये 50 हजार रुपये आया, तो वो समूह से लोन लेकर कुछ बड़ा व्यवसाय करने के बारे में सोचीं. तसवीन ने समूह से 30 हजार रुपये लोन लिया और पांच हजार रुपये खुद मिला कर कुल 35 हजार रुपये में एक भैंस की खरीदारी की. भैंस एक दिन में छह लीटर दूध देती है, जिसे तसवीन 40 रुपये प्रति किलो की दर से बेचती हैं. अब तो उनके पति भी दूध का कारोबार करते हैं. दूध बेच कर ही तसवीन ने 25 हजार रुपये का लोन भी चुका दिया है. अपनी आजीविका को और बढ़ाने के लिए तसवीन एक और भैंस लेना चाहती हैं. अपने पुराने दिनों को याद करते हुए तसवीन भावुक होते हुए कहती हैं कि अगर सखी मंडल न होता, तो आज वो दाने-दाने को मोहताज होतीं. सखी मंडल ने उन्हें और उनके परिवार को खुशहाल जिंदगी देने में अहम भूमिका निभायी है.

नेहा कुमारी

प्रखंड	बरवाडीह
जिला	लातेहार

महिला दिवस पर सम्मान समारोह

अमिता देवी

प्रखंड	रनिया
जिला	खूंटी

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के मौके पर खूंटी जिले के रनिया प्रखंड के किसान भवन में सम्मान कार्यक्रम का आयोजन किया गया. इस अवसर पर बेहतर काम करनेवाले ग्राम संगठन को पुरस्कृत भी किया गया, वहीं तुम्बकेल आजीविका महिला संगठन की एक महिला सदस्य को पांच हजार रुपये लोन की राशि दी गयी. इस अवसर पर यूबीआई के बैंक मैनेजर ने कहा कि सखी मंडलों को बैंक लिंकेज के जरिये 3,46,50,000 रुपये का भुगतान किया गया है. जरूरत पड़ेगी तो आगे और भी समूहों का बैंक लिंकेज किया जायेगा. खूंटी डीपीएम अनीता ने समाज में बेटियों के महत्व के बारे में बताते हुए कहा कि पहले बेटियों की पढ़ाई होनी चाहिए, उसके बाद विदाई होनी चाहिए. बेटियों के बारे में संचालित होने वाली सरकारी योजनाओं की जानकारी देते हुए लाडली लक्ष्मी योजना के बारे में बताया गया. कार्यक्रम के दौरान अंधविश्वास के नाम पर महिलाओं पर हो रहे अत्याचार को खत्म करने का संकल्प लिया गया और रनिया प्रखंड को नशामुक्त प्रखंड बनाने की बात कही गयी. बाल विवाह को भी समाप्त करने का संकल्प लिया गया. कार्यक्रम में रनिया के प्रखंड विकास पदाधिकारी, रनिया बीएमएमयू दिव्य ज्योति प्रकाश, जिला परिषद, उप प्रमुख, मुखिया, रनिया बीएमएमयू कार्यकर्ता समेत रनिया प्रखंड के तीनों कलस्टर की महिलाएं शामिल हुईं. कार्यक्रम के अंत में सभी ने रनिया प्रखंड का विकास करने का संकल्प लिया.

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर महिलाओं को संबोधित करते अधिकारी.

दीदियों के हाथ शौचालय निर्माण की कमान

शबनम खातून

प्रखंड	बरवाडीह
जिला	लातेहार

लातेहार जिले के बरवाडीह प्रखंड अंतर्गत ग्राम बेतला के परहिया टोली में स्वच्छ भारत मिशन के तहत पांच दिवसीय राजमिस्त्री प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया. इस अवसर पर शौचालय निर्माण में तेजी लाने व हर गांव को खुले में शौच से मुक्त करने के लिए पुरुष एवं महिलाओं को राजमिस्त्री का काम करने संबंधित प्रशिक्षण दिया गया. स्वच्छ भारत मिशन के तहत बिहार के बोधगया से आये जनार्दन ठाकुर और राजकुमार ठाकुर के द्वारा प्रशिक्षण दिया गया. प्रशिक्षण के दौरान जनार्दन ठाकुर ने बताया कि सरकार ने सबसे ज्यादा भरोसा महिलाओं पर किया है. इसलिए गांवों को ओडीएफ करने के लिए सरकार ने सखी मंडल की महिलाओं को चुना है. उन्होंने सभी से अपने-अपने गांवों को खुले में शौच से मुक्त करने संबंधित संकल्प लेने की अपील की. प्रशिक्षण मिलने के बाद अब सखी मंडल की महिलाएं खुद से शौचालय का निर्माण करेंगी. इससे मजदूर और राजमिस्त्री का पैसा भी बचेगा और बचत समूह का विकास होगा. राजमिस्त्री को मजदूरी के एवज में हर रोज तीन सौ रुपये और मजदूरों को डेढ़ सौ रुपया मिलेगा. मौके पर बीपीएम प्रवीण कुमार, जिला स्वच्छता प्रेरक संदीप डुंगडुंग, प्रखंड के को-ऑर्डिनेटर सुनील कुमार, कृष्णा सिंह, रुपाली कुमारी, शमीमा प्रवीण समेत काफी संख्या में महिला और पुरुष उपस्थित थे.

राजमिस्त्री प्रशिक्षण शिविर में मौजूद ग्रामीण.

कृषि मित्र से बैंक सखी का सफर

माइक्रो एटीएम मशीन के साथ महिला समूह की सदस्य हसरत बानो.

पलामू जिले के मेदिनीनगर प्रखंड के खनवा गांव की हसरत बानो कृषि मित्र हैं. किसानों को खेती की नयी तकनीक की जानकारी देते हुए उसे अपनाने के लिए प्रेरित भी करती हैं. वह खुद अपने खेतों में आधुनिक तकनीक से खेती करती हैं और आज खुशहाल हैं, हालांकि कुछ साल पहले तक हसरत बानो की स्थिति अच्छी नहीं थी. उनके पास जमीन तो थी, लेकिन पूंजी और जानकारी का अभाव था. इसके कारण उनकी जिंदगी जैसे-तैसे बीत रही थी. साल 2015 में सखी मंडल की जानकारी मिलने पर समूह से जुड़ीं और कुछ ही दिनों में समूह की अध्यक्ष बन गयीं. जब गांव में कृषि मित्र का चयन हुआ, तो गांव की महिला समूह की महिलाओं ने कृषि मित्र के लिए हसरत बानो का चुनाव किया. इस दौरान कृषि मित्र का प्रशिक्षण भी मिला. प्रशिक्षण पूरा करके जब हसरत बानो अपने गांव पहुंचीं, तो समूह की महिलाओं को जैविक खाद बनाने व जैविक खाद का इस्तेमाल करके बंजर जमीन को उपजाऊ बनाने संबंधी जानकारी दिया. आज गांव व आसपास कृषि मित्र के तौर पर हसरत बानो की अलग पहचान बन गयी है. अपने परिवार की आर्थिक स्थिति को सुधारने के लिए हसरत बानो अब तक समूह से 80 हजार रुपये तक का लोन ले चुकी हैं. सबसे पहले हसरत बानो ने समूह से 10 हजार रुपये का लोन लिया था और अपने बच्चों का नामांकन अच्छे स्कूल में कराया. बच्चों का नामांकन होने के बाद उन्होंने समूह से 70 हजार रुपये का लोन लिया और अपने पति के लिए आटा चक्की की दुकान खोली. आटा चक्की चलाने में पूरा परिवार सहयोग करता है. वह और उनके पति बदरूद्दीन की मेहनत से आटा चक्की का काम चल निकला और अब महीने में 20-22 हजार रुपये की आमदनी होने लगी. इसके बाद हसरत बानो कुछ और रोजगार करने के लिए सोचने लगीं. हसरत बानो को जेएसएलपीएस द्वारा प्रत्येक प्रखंड में दिये जा रहे माइक्रो एटीएम के बारे में जानकारी मिली. हसरत को यह भी जानकारी मिली की माइक्रो एटीएम के जरिये वो ग्रामीणों की बैंकिंग समस्या का समाधान कर सकती हैं. उन्होंने 10 हजार रुपये में माइक्रो एटीएम मशीन की खरीदारी की और उसे चलाने का प्रशिक्षण लिया. प्रशिक्षण मिलने के बाद अब हसरत बानो गांव में ग्रामीणों के बीच बैंकिंग सेवा भी देने लगी हैं.

ममता देवी

प्रखंड	मेदिनीनगर
जिला	पलामू

सिलाई मशीन से सुजीता की जिंदगी ने पकड़ी रफ्तार

वीणा देवी

प्रखंड	मनोहरपुर
जिला	प सिंहभूम

पश्चिमी सिंहभूम जिले के मनोहरपुर प्रखंड की ढीपा पंचायत की बड़पोस गांव की सुजीता महतो की जिंदगी ने सिलाई मशीन से रफ्तार पकड़ी है. वह आत्मनिर्भर हो रही हैं. सिलाई मशीन के जरिये वो अपनी आर्थिक स्थिति मजबूत कर रही हैं. समूह से जुड़ने से पहले सुजीता की आर्थिक स्थिति बेहद खराब थी. परिवार चलाने के लिए पति को मजदूरी करने के लिए बाहर जाना पड़ता था. उसके बाद भी आर्थिक स्थिति में सुधार नहीं हो रहा था. पैसों की कमी के कारण वो हाथ से ही लोगों के कपड़े सिला करती थीं और किसी तरह जीवन-यापन कर रही थीं. सुजीता वर्ष 2014 में आशा स्वयं सहायता समूह से जुड़ी. समूह से ही पांच हजार रुपये का लोन लेकर सिलाई मशीन खरीदीं और छोटी दुकान खोलकर लोगों के कपड़े सिलाई करने लगीं. धीरे-धीरे समूह से लिये लोन को चुकता कर दिया. सिलाई-कढ़ाई के काम से सुजीता की आमदनी बढ़ने लगी और धीरे-धीरे उनका परिवार आर्थिक तंगी से बाहर आने लगा. कपड़े सिलाई करके सुजीता हर रोज लगभग पांच सौ रुपये कमा लेती हैं. सुजीता कहती हैं कि महिला समूह से जुड़ कर सपना साकार हुआ है.

रजिस्टर नहीं, अब टैबलेट से होगा काम

रूबी खातून

प्रखंड	अनगड़ा
जिला	रांची

सखी मंडल की महिलाओं को डिजिटल बनाने के लिए राजधानी रांची के सनराइज इन होटल में अनगड़ा प्रखंड के 32 मास्टर बुककीपर्स का पांच दिवसीय प्रशिक्षण शिविर आयोजित हुआ. प्रशिक्षण के दौरान सभी मास्टर बुककीपर्स को टैबलेट दिया गया और टैबलेट में किस तरीके से काम करना है, इसकी पूरी जानकारी दी गयी. पिरतोल गांव की बुककीपर श्रेया देवी ने बताया कि वो अपने गांव के सखी मंडलों में जाकर एमआइएस रजिस्टर बनाती हैं. इस काम को करने में उन्हें काफी समय लगता था. हिसाब-किताब करने व समूह की सदस्यों का नाम लिखने में अक्सर भूल भी हो जाती थी. इसके कारण दोबारा एमआइएस शीट वापस आ जाती थी और उसे फिर से सही करके भेजना पड़ता था. शीट कलस्टर तक भेजने में भी काफी दिक्कत होती थी. एमआइएस रजिस्टर को रखने में भी परेशानी होती थी. टैबलेट के जरिये अब काम आसान हो गया है. अनगड़ा कलस्टर के डाटा ऑपरेटर मनीष ने बताया कि मास्टर बुककीपर को टैबलेट देने से उन्हें अब काम करने में मन लगेगा. सखी मंडल से जुड़ कर इनके जीने का तरीका बदल गया है.

किराना दुकान ने सुलोचना को दिया सहारा

आशा तिग्गा

प्रखंड	मनोहरपुर
जिला	प सिंहभूम

पश्चिमी सिंहभूम जिले के मनोहरपुर प्रखंड की सुलोचना महतो आज अपने परिवार के साथ खुशहाल जिंदगी जी रही हैं. वह किराना दुकान चलाती हैं, जिससे उनका परिवार चल रहा है. पहले उनके पति खेती-बारी करते थे, जिससे चार सदस्यों वाले परिवार का भरण-पोषण करना थोड़ा मुश्किल हो रहा था. महिला समूह के बारे में जानकारी मिलने पर वो गांव में ही संचालित प्रगति स्वयं सहायता समूह से जुड़ गयीं. घर के खर्च के लिए उन्होंने समूह से दो हजार रुपये का लोन लिया. उसे चुकाने के बाद समूह से 10 हजार रुपये का लोन लिया और राशन दुकान की शुरुआत की. राशन दुकान चल निकला और उन्हें इससे अच्छा मुनाफा होने लगा. अब सुलोचना अपने बच्चों को अच्छे स्कूल में पढ़ा रही हैं. पूरा लोन चुकाने के बाद अपनी दुकान बढ़ाने के लिए समूह से 20 हजार रुपये का लोन लिया. आज वह महीने में छह हजार रुपये कमा रही हैं. इसके साथ-साथ अब वो समय पर लोन की रकम भी चुका रही हैं. सखी मंडल से पति के व्यवसाय के लिए एक लाख रुपये का लोन जल्द लेंगी. सुलोचना कहती हैं कि जेएसएलपीएस से जुड़ कर उन्हें काफी सहारा मिला.

आशा दीदी ने महिलाओं को पढ़ाया स्वास्थ्य लाभ

इमानती भेंगरा

प्रखंड	मनोहरपुर
जिला	प सिंहभूम

पश्चिमी सिंहभूम के मनोहरपुर प्रखंड के रेड़ा गांव में आशा दीदी ने गर्भवती महिलाओं को स्वास्थ्य लाभ के तरीके बताये. रेड़ा आजीविका महिला ग्राम संगठन की बैठक में आशा दीदी ने विस्तार से इस संदर्भ में जानकारी दी. उन्होंने गर्भवती महिलाओं को सही समय पर टीकाकरण करने, गर्भ के तीसरे व चौथे महीने में टीटी का इंजेक्शन लेने, छह महीना पूरा होने से पहले टीटी का इंजेक्शन कोर्स पूरा कर लेने, बच्चे के जन्म के बाद बीसीजी का टीका दिलाने, बच्चों को ओपीवी और पोलियो का टीका दिलाने, बच्चे के डेढ़ महीने होने पर उसे पेन्टापोलियो का टीका देने समेत खसरा का टीकाकरण कराने संबंधित जानकारी दी. आशा दीदी ने महिलाओं को बताया कि जब बच्चा पांच साल का हो जाये, तो उसे डीपीटी का इंजेक्शन दिलाना चाहिए और किशोरियों को टीटी का इंजक्शन जरूर दिलाएं. आशा दीदी ने महिलाओं को गर्भावस्था के दौरान आयरन की गोली लेने के लिए कहा. ग्रामीण महिलाओं को गर्भावस्था के दौरान विशेष सावधानी बरतने की बातें भी कही गयी. साथ ही बच्चे होने पर जच्चा-बच्चा पर भी ध्यान देने की जरूरत है.